अन्तरधार्मिक परिसम्वाद सम्बन्धी

परमधर्मपीठीय परिषद

ख्रीस्तीय एवं जैन धर्मानुयायीः

वर्तमान में और महामारी के बाद के विश्व में आशा का पुनर्निर्माण करें

महावीर जन्म कल्याणक दिवस 2021

वाटिकन सिटी

प्रिय जैन मित्रो,

परमधर्मपीठीय अन्तरधार्मिक परिसम्वाद परिषद इस वर्ष 25 अप्रैल को मनायी जानेवाली *तीर्थंकर* श्री वर्धमान महावीर की जयन्ती के सुअवसर पर आप सबका विनम्र अभिवादन करते हुए सौहार्द्रपूर्ण शुभकामनाएँ अर्पित करती है। हमारी मंगलकामना है कि कष्टकर एवं दीर्घकालीन कोरोना वायरस महामारी के इस समय में यह पवित्र महापर्व आपके दिलों और घरों को शांति एवं सुकून से नवीकृत करे; तीर्थंकर की शिक्षाएं एक सुरक्षित एवं बेहतर भविष्य के लिये आपमें आशा को पुनर्जागृत करे तथा विश्व में खुशहाली एवं शांति हेतु सामुदायिक बन्धनों को सुदृढ़ करे।

यह दसवाँ वर्ष है जबसे इस परमधर्मपीठीय परिषद ने इस सुअवसर पर प्रथम बार अपने बधाई सन्देश के माध्यम से आपके साथ सम्बन्ध स्थापित किया था । इस मौके पर हम आपमें से प्रत्येक को, जैन एवं ख्रीस्तीय धर्मानुयायियों के बीच ही नहीं, अपितु विविध धर्मों की परम्पराओं के लोगों के बीच भी सम्मानीय मित्रता एवं भ्रातृत्व की भावना को बढ़ावा देने में सहयोग करने के लिये धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। साथ ही, इस महामारी के समय आपकी करूणामयी सेवाओं के लिये भी आपकी सराहना करते हैं जिन्हें आपने व्यक्तिगत अथवा सामूहिक रूप से विश्व के विभिन्न हिस्सों में सम्पादित की हैं। इस वर्ष हम आपके साथ इस चिन्तन को साझा करना चाहते हैं कि वर्तमान में और महामारी के बाद के समय में हम कैसे एक साथ मिलकर आशा का पुनर्निर्माण कर सकते हैं।

किसी से 'आशा' के बारे में सुनना उन लोगों के लिये चुनौतीपूर्ण प्रतीत हो सकता है जिनके जीवन महामारी के परिणामस्वरूप उथल-पुथल एवं अभिभूत हो चुके हैं, जो कि स्वाभाविक है। फिर भी, विश्वासियों के रूप में हमने आशा को अपने इस विश्वास पर स्थापित किया है कि सर्वोच्च ईश्वर जो हमें सम्भालते तथा जीवन के उतार-चढ़ाव में हमारा मार्गदर्शन करते हैं, हमारा परित्याग कदापि नहीं करेंगे। हम निराशा में पड़े लोगों में आशा के संचार का भी प्रयास करते हैं। केवल आशा ही हमें साहस और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ने में मदद कर सकती है। अस्तु, वर्तमान परिस्थितियों में जीवन में आगे बढ़ने के लिये, अपने वर्तमान एवं भविष्य के पुनर्निर्माण के लिये तथा दूसरों को भी उनके पुनर्निर्माण में मदद प्रदान करने के लिये 'आशा का सदगुण' अति निर्णायक है।

आशा का पुनर्निर्माण तभी सम्भव है जब एकजुटता की भावना के साथ एक दूसरे के समर्थन का भाव भी हो। इस कठिन दौर में सम्पूर्ण विश्व के लिये आशा के प्रतीक बन चुके सन्त पापा फ्राँसिस ने, प्रायः, वर्तमान में तथा महामारी के बाद के विश्व में 'नवीकृत आशा' के लिये अपील की है। उचित ही वे इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि "कोई भी स्वतः ही 'पुनर्निर्माण' नहीं करता; कोई भी अकेले नई शुरुआत नहीं कर सकता"। हमें मित्रवत एवं भ्रातृपूर्ण हाथों की आवश्यकता है जो "हमारे क्षितिज एवं हमारी आशा को ऊपर उठा सकने में सक्षम हों।"

(ट्रिपल डिज़ास्टर - त्रिपक्षीय आपदा के पीड़ितों के साथ बैठक, "बेल्लेसाल्ले ह्नज़ोमोन", टोक्यो, जापान, 25 नवम्बर 2019)। सभी विभाजनों के परे, लोगों के बीच भाईचारे और एकजुटता की भावना को पोषित एवं प्रोत्साहित करते हुए आशा को पुनर्निर्मित करने में, धर्मों, धार्मिक नेताओं और वस्तुतः, समस्त विश्वासियों की विशेष भूमिका है।

वर्तमान महामारी के आरम्भ में, महान 'आशा के संकेत' भी देखे गये, जिनमें से सबसे उत्कृष्ट संकेत था - अभूतपूर्व एकजुटता की भावना, जिसमें अन्तरधार्मिक एकात्मता की भावना भी शामिल थी, जिसका नज़ारा कोरोना-वायरस एवं इसके बाद लगे लॉकडाऊन से प्रभावित लोगों के लिये सेवाकार्यों में देखने को मिला। यह आशा के पुनर्निर्माण हेतु तथा अन्यों को भी एकजुटता की ठोस अभिव्यक्तियों की ओर प्रोत्साहित करने के लिये पर्याप्त कारण है जिससे आशा का प्रसार और बढ़ सकता है। वर्तमान महामारी के दौर में आशा का पुनः निर्माण एक ऐसे भविष्य का शुभारम्भ कर सकता है जिसमें मनुष्यों ने 'वायरस' के सभी रूपों - यहाँ तक कि सामाजिक वायरसों, जैसे असमानता, अन्याय, धार्मिक कट्टरवाद, अतिवाद, नस्लवाद, अस्वस्थ राष्ट्रवाद और समाज के सबसे कमज़ोर लोगों का शोषण आदि – को समाप्त करने के लिए अपने सभी बलों और संसाधनों को एकजुट करना सीख लिया होगा जो प्रायः, व्यक्तियों और समुदायों के बीच सामंजस्यपूर्ण और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के मार्ग में आड़े आते हैं।

अपनी-अपनी धार्मिक परम्पराओं में मूलबद्ध विश्वासी होने तथा सभी के कल्याण हेतु, विशेष रूप से, उन लोगों के जो महामारी के इस दौर में अपने वर्तमान एवं भविष्य की आशा खो चुके हैं, साझा मूल्यों एवं उत्कंठाओं वाले व्यक्ति होने के नाते, हम ख्रीस्तीय एवं जैन धर्मानुयायी, व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से तथा अन्य धार्मिक परम्पराओं के लोगों एवं सर्वत्र व्याप्त शुभचिन्तकों के साथ मिलकर वह सब कुछ करें जो दूसरों के जीवन में आशा का पुनर्निर्माण कर सके जिससे वे स्वयं 'आशा के वाहक' बन सकें!

आप सभी को महावीर जन्म कल्याणक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

कार्डिनल मिगेल आन्गेल अयुसो गिक्सो, एमसीसीजे

अध्यक्ष

मोन्सिन्योर इन्दुनिल कोडिथुवाक्कु जनकरतने कंकनमलगे

सचिव

PONTIFICAL COUNCIL FOR INTERRELIGIOUS DIALOGUE
00120 Vatican City

Tel: +39.06.6988 4321
Fax: +39.06.6988 4494

E-mail: dialogo@interrel.va
http://www.pcinterreligious.org/